

② व्यंजन संधि- 'स्वर+व्यंजन, व्यंजन+स्वर, व्यंजन+व्यंजन'

यदि किसी स्वर के बाद व्यंजन आ जाए या व्यंजन के बाद स्वर आ जाए भ्रथवा व्यंजन के बाद व्यंजन ही आ जाए तो व्यंजन के उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होगा है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं-

जैसे- वाक् + जात - वाग्जात्, वि + छेद - विच्छेद्, सत् + उपदेश = सद्गुपदेश

① जश्त्व व्यंजन संधि-^० क/च/र/ल/प + घोषवर्ण (पंचमवर्ण को छोड़कर)
 ग/ज/ड/ढ/ब

यदि वर्ग के प्रथम वर्ण क/च/र/ल/प के बाद कोई घोषवर्ण आ जाए (पंचमवर्ण को छोड़कर) तो क/च/र/ल/प का अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है-

जैसे- वाक् + हरि - वाग्घरि, वाक् + दान - वाग्दान (सगाई)
 ग घ ग

ऋक् + वेद - ऋग्वेद, सम्यक् + दर्शन - सम्यग्दर्शन

ऋ
 ऋ

अच् + भन्त - अजन्त, अच् + भादि - अजादि

अ
 अ

अ
 अ

उत् + हार - उद्धार, षट् + आनन - षडा नन

उ
 उ

उ
 उ

ष
 ष

षट् + ऋतु - षट् ऋतु, षट् + राग - षट् राग

ष
 ष

ष
 ष

ष
 ष

ष
 ष

जगत् + अम्बा - जगदम्बा, षडयंत्र - षट् + यंत्र

जगत् + ईश - जगदीश

सत् + आचार - सदाचार

भगवत् + गीता - भगवद्गीता

भगवद्भक्ति - भगवत् + भक्ति

सत् + धर्म - सद्धर्म

उत् + घाल् - उद्घाल्, तदनुसार - तत् + अनुसार
 दै दै

उद्घृत् - उत् + हृत्, उद्धरण - उत् + हरण
 दै धै दै धै

पद्धति - पत् (पद्) + हति, सच्चिदानन्द - सच्चित् + भानन्द
 दै धै दै धै

अप् + ज - अज्, अप् + द - अद्, अभरण - अप् + भरण
 दै दै दै

(ii) क/च/ट/ठ/पू + पंचम वर्ण
 ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
 झ/ज/ण/न/मू

यदि वर्ग के प्रथम वर्ण क/च/ट/ठ/पू के बाद कोई पंचम वर्ण आ जाए तो क/च/ट/ठ/पू का अपने ही वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है -

जैसे - वाक् + मय - वाङ्मय, दिक् + नाग - दिङ्नाग,
 ↓ ↓
 झं झं

षट्+मूर्ति- षट्मूर्ति, षट्+मुख- षट्मुख
 ण

उत्+माद- उन्माद, उत्+मुख- उन्मुख
 न्

पन्नग- पत्(पद्)+नग, 'सृष्टमूर्ति- सृत्(सृद्)+मूर्ति
 न् न्-ण

अप्+मय- अम्मय, उप्+मय- उम्मय
 म् म्